हिमाचल प्रदेश में आलू की फसल में पिछेता झुलसा बीमारी के प्रबंधन हेतु सलाह

मौसम की अनुकूलता के आधार पर गत वर्ष की भॉति इस वर्ष भी संस्थान द्वारा विकसित इन्डो- ब्लाइटकास्ट (पैन इंडिया) मॉडल से पिछेता झुलसा बीमारी का पूर्वानुमान लगाया गया है, जिसके अनुसार आलू की फसल में पिछेता झुलसा बीमारी निकट भविष्य में आने की सम्भावना है। अतः किसान भाइयों से अनुरोध है कि निमन्वत बिन्दुओं पर अमल करके अपनी फसल को इस बीमारी से बचाएं।

1. जिन किसान भाईयों ने आलू की फसल में अभी तक फफूंदनाशक दवा का पर्णीय छिडकाव नहीं किया है या जिनकी आलू की फसल में अभी पिछेता झुलसा बीमारी प्रकट नहीं हुई है, उन सभी किसान भाईयों को यह सलाह दी जाती है कि वे मैन्कोजेब / क्लोरोथलोनील युक्त फफूंदनाशक दवा का रोग सुगाही किस्मों पर 0.2 प्रतिशत की दर से अर्थात् 2.0 किलोग्राम दवा 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर छिडकाव तुरन्त करें।
2. जिन खेंतों में बीमारी प्रकट हो चुकी हो उनमें किसी भी फफूंदनाशक जैसे साईमोक्सेनिल + मैन्कोजेब या फेनोमिडोन + मैन्कोजेब या डिमेथोमोर्फ + मैन्कोजेब का 0.3 प्रतिशत की दर से अर्थात् 3.0 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर (1000 लीटर पानी) की दर से छिडकाव करें।
3. फफूंदनाशक का छिडकाव दस दिन के अन्तराल पर दोहराया जा सकता है। लेकिन बीमारी की तीव्रता के आधार पर इस अन्तराल को घटाया या बढ़ाया जा सकता है। किसान भाइयों को इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि एक ही फफूंदनाशक का बार - बार छिडकाव न करें तथा फफूंदनाशक के साथ स्टिकर (0.1%) का इस्तेमाल अवश्य करें।
4. खेतों में जल निकास का उचित प्रबंध रखें एवं खेतों को खरपतवार रहित रखें।